

नया ज्ञानोदय

फरवरी-मार्च 2025
मूल्य : 50 रुपये

काफ़का
अवसान के सौ वर्ष



भारतीय ज्ञानपीठ



भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन

श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

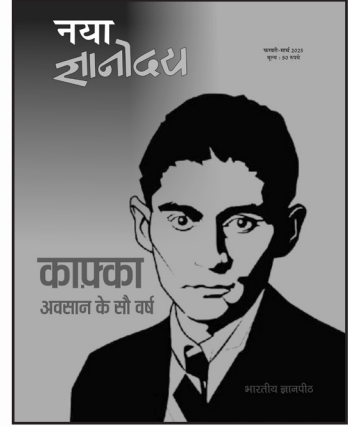
साहित्य, समाज, संस्कृति
और कलाओं पर केंद्रित

सम्पादक

मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक

महेश्वर, प्रभाकिरण जैन



अंक : 231

फरवरी-मार्च 2025

साहू अखिलेश जैन

प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,

नई दिल्ली-110 003

फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423

ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com

bookclub@jnanpith.net

gmbharatiyajnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya

A Literary Bi-monthly Magazine

Editor : Madhu Sudan Anand

Language : Hindi

Published by **Bharatiya Jnanpith**

18, Institutional Area, Lodi Road,

मूल्य : 50

50 रुपये + 10 रुपये (डाक खर्च)

सदस्यता शुल्क :

व्यक्तियों के लिए— वार्षिक (6 अंक) : 360 रुपये (डाक खर्च सहित)

संस्थाओं के लिए—वार्षिक (6 अंक) : 460 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (Bharatiya Jnanpith)' के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

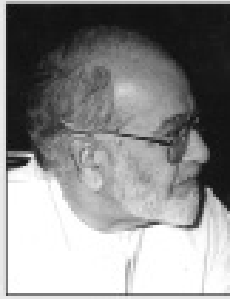
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

आवरण व साज-सज्जा : महेश्वर

www.jnanpith.net



ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार



अज्ञेय



रामचारी सिंह दिनकर



सुमित्रानन्दन पंत



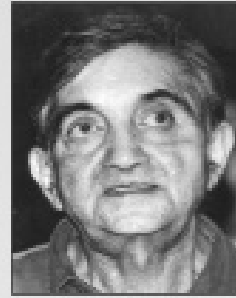
श्रीज्येश मेहता



महादेवी वर्मा



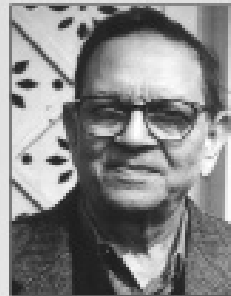
अमरकान्त



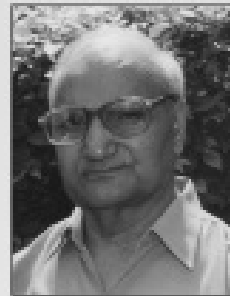
निर्मल वर्मा



कैटकरनाथ सिंह



कुँवर नारायण



श्रीलाल शुक्ल



कुम्भा सोबती

www.jnanpith.net



साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

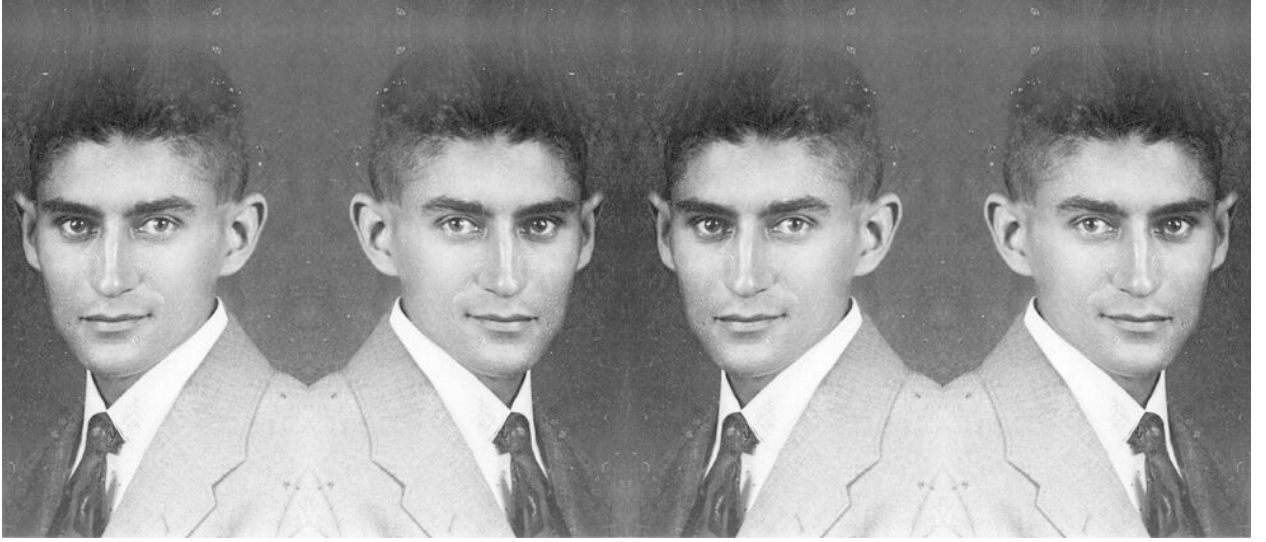
अंक : 231

फरवरी-मार्च 2025

पृष्ठ : 84 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम



कहानियाँ

- कार्यांतरण : फ्रान्ज़ काप्रका / 06
दंडद्वीप में : फ्रान्ज़ काप्रका / 24
एक छोटी महिला : फ्रान्ज़ काप्रका / 34
ग्यारह बेटे : फ्रान्ज़ काप्रका / 37

लघुकथाएँ

- अजीब भ्रम : फ्रान्ज़ काप्रका / 40
नया वकील : फ्रान्ज़ काप्रका / 40

कविताएं

- सोलह जनवरी : फ्रान्ज़ काप्रका / 41
ठंडा और कठोर : फ्रान्ज़ काप्रका / 41

आलेख / संस्मरण

- काप्रका पर मिलेना के प्यार के हमले / 42
'दिन में एक जादू होता है' : गुस्ताव जैनुक / 47
खिड़की पर खड़ा शख्स : पीएन्त्रो चिताती / 51
'के' से काप्रका पढ़िए! : सुधांशु गुप्त / 64
काप्रका: प्रभाव और प्रासंगिकता : केशव चतुर्वेदी / 67
कमरा नंबर बाईस-काप्रका की खिड़की! : स्वाति शर्मा / 70
कहाँ है इन कहानियों का उत्स! : सुधांशु गुप्त / 73

हिन्दी कविता

विश्वनाथ सचदेव / 77

सिनेमा

सिनेमा में काप्रका की उपस्थिति : सौम्य शाश्वत / 78



काफ़्का अवसान के सौ वर्ष



कायांतरण

फ्रान्ज़ काफ़्का

एक सुबह जैसे ही ग्रेगोर सेम्सा की आंख खुली उसने पाया कि वह एक विशालकाय कीड़े में परिवर्तित हो गया है और अपनी बख़्तरबंद पीठ के सहारे पलंग पर लेटा हुआ है। उसने सिर उठाकर अपने कल्थई, गुंबदनुमा पेट को देखा, जिससे टकराकर मसहरी गिरने को हो रही थी। उसके अनगिन पैर, उसके शरीर की तुलना में दयनीय रूप में छोटे और पतले थे और बेबसी से छटपटा रहे थे।

मुझे क्या हो गया? ग्रेगोर ने सोचा। निश्चित रूप से यह कोई सपना नहीं था। चारों दीवारों के बीच उसका छोटा-सा सोने का कमरा ज्यों-का-त्यों था। टेबल पर उसके धंधे के नमूने फैले हुए थे। ग्रेगोर एक ट्रेवलिंग एजेंट था। ऊपर दीवार पर एक तस्वीर टंगी थी, जिसे हाल ही में उसने एक रंगीन पत्रिका से काटकर, सुनहरे फ्रेम में जड़वा लिया था। तस्वीर में रोएंदा टोपी और फरकोट पहने एक सुंदर लड़की खड़ी हुई थी।

सेम्सा की आंखें आकाश की ओर मुड़ीं। खिड़की के सायबान पर गिरती बूंदों ने उसे अवसाद से भर दिया। इस बेहूदगी को भूलने के लिए क्यों न कुछ और सो लिया जाए? उसने सोचा, लेकिन सोना असंभव था, क्योंकि वह दाईं करवट लेटने का आदी था, जो मौजूदा हालत में नामुमकिन था। वह बार-बार दाईं करवट लेने की कोशिश करता, पूरी ताकत से, लेकिन हर बार पीठ के बल लुढ़क जाता। अपनी विचित्र टांगों को देखने से बचने के लिए उसने कम-से-कम सौ बार आंखें बंद कीं और तभी रुका, जब उसके बगल में सुस्ती पैदा करने वाला दर्द नहीं होने लगा— ऐसा दर्द तो इससे पहले कभी नहीं था। हे ईश्वर! मैंने कैसा भाग-दौड़ वाला धंधा चुना है? दिन-रात सफ़र-ही-

सफ़र! उसने सोचा। यह मालगोदाम में बैठकर बिक्री करने से कहीं ज्यादा मुश्किल काम था। इसके अलावा इसमें दूसरी तरह की कठिनाइयां भी थीं, जैसे रोज-रोज़ नए और अजनबी लोगों से भेंट करने की बेचैनी, ट्रेनों का टाइमटेबल और उनके सही कनेक्शनों की जानकारी रखना और खाने-पीने के मामलों में हद दर्जे की अनिश्चितता। सहसा उसे पेट में हल्का दर्द महसूस हुआ। उसने सिरहाने की ओर सरकने की कोशिश की ताकि थोड़ा-सा सिर उठाकर हिल-डुल सके। उसने पेट के सफेद रोओं वाले हिस्से को देखा, जहां दर्द हो रहा था। उसे पैरों से छुआ, इसके साथ ही समूचे शरीर में दर्द की सर्द लहर दौड़ गई। उसने घबराकर तुरंत पैरों को हटा लिया। यह उसके शरीर का सबसे अधिक संवेदनशील अंग था।

वह सरककर फिर पहले की हालत में आ गया। “जल्द उठने की आदत आदमी को किस कदर मूर्ख बना देती है?” उसने सोचा, “दूसरे धंधे वाले हरम में रहने वाली औरतों की तरह चैन से रहते हैं। मसलन जब मैं सुबह ऑर्डर लेने के लिए किसी होटल में जाता हूं, तो उन्हें नाश्ता करता हुआ देखता हूं। अब अगर मैं अपनी तकलीफ़ अपने चीफ को बताऊं तो वह मुझे उसी समय बर्खास्त कर देगा। लेकिन कौन कह सकता है, मेरी भलाई शायद इसी में हो। अगर मुझे अपने मां-बाप की चिंता न होती तो बहुत पहले नौकरी छोड़ने का नोटिस दे दिया होता। मैं सीधा चीफ के पास जाता और साफ-साफ शब्दों में बताता कि वास्तव में उसके बारे में मेरी क्या राय है। इस पर वह भौंचक्का होकर अपनी मेज़ से उछल पड़ता। लेकिन ठीक है, मैंने पिता का कर्ज चुकाने के लिए काफ़ी रकम जमा कर ली है। अब



बिस्तर छोड़ना चाहिए। मुझे पांच की गाड़ी पकड़नी है।”

उसने टिक-टिक करती अलार्म घड़ी की ओर देखा, जिसके कांटे साढ़े छह बजा रहे थे। क्या घड़ी बंद हो गई? बिस्तर से साफ दिखता था कि घड़ी में चार का अलार्म लगा है। क्या यह संभव है कि अलार्म बजता रहा हो और वह सोता रहा हो? लेकिन अब? अगली गाड़ी सात पर है। उसे पकड़ने के लिए पागलों जैसी फुर्ती से काम करना पड़ेगा। टेबल पर बिखरे पड़े नमूनों को पैक करना पड़ेगा। अगर किसी तरह गाड़ी पकड़ भी ली तो चीफ के झगड़े से नहीं बच सकता, क्योंकि चौकीदार ने पांच बजे उसका इंतजार किया होगा और उसके न आने की खबर चीफ को दे दी होगी। चौकीदार चीफ का आदमी है, मूर्ख और डरपोक। अगर वह बीमारी का बहाना कर दे तो? तो इससे वह संदिग्ध दिखेगा, क्योंकि पांच साल की नौकरी में वह एक भी दिन के लिए बीमार नहीं पड़ा। उस हालत में चीफ बीमा कंपनी के डॉक्टर को लेकर आ धमकेगा। डॉक्टर की राय के आधार पर उसके बहाने को खारिज कर देगा और उसके मां-बाप से उसके कामचोर होने की शिकायत करेगा।

जिस समय उसके दिमाग से ऐसे दृश्य गुजर रहे थे, सिरहाने की तरफ के दरवाजे पर आहट हुई। फिर एक कोमल आवाज़, जो उसकी मां की थी, “ग्रेगोर, तुम्हें ट्रेन नहीं पकड़नी क्या? पौने सात हो रहे हैं?” उत्तर में जो ग्रेगोर ने कहा, उससे उसे अपनी आवाज़ पर आश्चर्य हुआ। निश्चित रूप से ये उसी की आवाज़ थी, जिसके शुरू के कुछ ही शब्द स्पष्ट थे, लेकिन कुछ इस तरह सपाट कि उनका

कोई मतलब नहीं निकलता था। उसके मुंह से सिर्फ इतना निकला, “हां मां! मैं उठ रहा हूं। धन्यवाद।” बीच में काठ के किवाड़ों की मौजूदगी के कारण मां ने उसकी आवाज़ में कोई फर्क नहीं महसूस किया। वह संतुष्ट होकर चली गई। फिर बगल के दरवाजे पर पिता की मुट्ठियों से किवाड़ पीटने की आहट आई। फिर उनकी आवाज़, “ग्रेगोर! ग्रेगोर!...” दूसरी ओर के दरवाजे से बहन का कोमल स्वर उभरा, “ग्रेगोर! तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न? तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं?”

“मैं ठीक हूं।...” ग्रेगोर ने कहना चाहा।

पिता नाश्ते के लिए चले गए, लेकिन बहन वहीं खड़ी रही।

“ग्रेगोर, दरवाज़ा खोलो,” बहन ने फुसफुसाकर कहा।

उसका इरादा फिलहाल दरवाज़ा खोलने का नहीं था। उसे पहली बार यात्राओं से मिली अपनी आदत का फायदा महसूस हुआ। घर पर वह सोने से पहले दरवाजे अंदर से बंद कर लिया करता था।

उसने तय किया कि वह चुपचाप उठेगा, कपड़े पहनकर नाश्ता करेगा, फिर आगे का कार्यक्रम बनाएगा। देर से सही, उसकी समझ में आ गया था कि लेटे-लेटे कुछ नहीं होगा। उसे पिछले दिनों की याद आई, जब उसे बिस्तर पर पड़े-पड़े, अक्सर दर्द होने लगता था। उठते ही दर्द के साथ सुबह का दुःस्वप्न भी उसके दिमाग से उतर जाएगा और जहां तक आवाज़ में आ जाने वाले फर्क का सवाल है, यह इस बात का संकेत है कि जल्द ही उसे तेज़ जुकाम होने वाला है।

मसहरी से निजात पाना आसान था। उसने लेटे-लेटे अपने पेट को